ISSN: 2348-3083
SJIF 2016 : 4.44
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि क्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

सोनिया पाल[1] & डी. एस. गड़िया[2], Ph. D.

[1]भोध–छात्रा, शिक्षा विभाग, हिमगिरी ज़ी वि वविद्यालय, देहरादून

[2]ऐसोसिऐट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिमगिरी ज़ी वि वविद्यालय, देहरादून

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन का उद्दे य गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि क्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर देखना था। यह अंतर ग्रामीण एवं भाहरी छात्राध्यापिकाओं के लिए अलग–अलग देखा गया है। इस अध्ययन के लिए यादृच्छिक न्याद ि न तकनीकी का प्रयोग कर गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि क्षण संस्थाओं में अध्ययनरत बी0एड0 के 200 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया। प्रस्तुत भोध कार्य में तथ्य संकलन करने के लिए डॉ0 जे0 सी0 गोयल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत अध्यापक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के वि लेशण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण एवं भाहरी दोनों क्षेत्र के सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि क्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। यह अंतर निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि क्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं के पक्ष में पाया गया।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

ि क्षक राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। ि क्षक पर राष्ट्र व मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है। ि क्षक का महत्व कभी समाप्त नहीं होता, जिस प्रकार एक कलाकार एक कला का निर्माण करता है, उसी प्रकार एक ि क्षक बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करता है तथा उसके सम्पूर्ण विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। प्राचीन काल से मध्यकाल के प्रारंभिक चरण तक ि क्षक निःस्वार्थ भाव से ि क्षण कार्य करते थे। किन्तु समय के बदलते परिवे ा के साथ ि क्षक भी बदला है। परन्तु वर्तमान समय में ि क्षण को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। जिसके कारण अब अधिकतर ि क्षक धन अर्जन के लिए कार्य करते हैं। पहले ि क्षण एक आद र्ा कार्य था जिससे इस कार्य में अच्छे लोग आते थे। आज अधिकतर छात्र–छात्रायें बी0एड0 पाठ्यक्रम का चुनाव अन्तिम विकल्प के रूप में करते हैं तथा इसे एक आरामदायक व्यवसाय के रूप में देखते हैं। ऐसी

स्थिति में काफी संख्या में ऐसे व्यक्ति ि ाक्षक बन जाते हैं जिनमें ि ाक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का अभाव पाया जाता है। विद्यार्थियों के चरित्र–निर्माण व उन्हें योग्य नागरिक बनाने में ि ाक्षण के प्रति ि ाक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सकारात्मक अभिवृत्ति वाले ि ाक्षक केवल बालकों के विकास पर ही नहीं वरन स्वयं के विकास और संस्था के विकास में अभिवृत्ति लेते हैं। अभिवृत्ति का अर्थ है, किसी वस्तु से लगाव, जिस वस्तु से हमें लगाव होता है वह हमारे लिए दूसरी वस्तुओं से भिन्न व महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवसाय का चुनाव अपनी अभिवृत्ति व योग्यता को ध्यान में रखते हुए ही करता है और यह आव यक भी है कि जिस व्यवसाय के लिए व्यक्ति योग्य है, वह उसी व्यवसाय का चुनाव करे, क्योंकि तभी वह उस व्यवसाय को अपना सौ प्रति ात योगदान दे सकता है। यदि किसी व्यवसाय में अभिवृत्ति रखने वाले व्यक्ति आए तो वह व्यवसाय भी उन्नति करेगा तथा इसके साथ ही समाज एवं राष्ट्र की भी उन्नति होगी। वर्तमान समय में सफल ि ाक्षक वही होता है जो ि ाक्षण–अधिगम प्रक्रिया, विद्यालय, छात्र विषय–वस्तु तथा समुदाय आदि के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखता हो।

आधुनिक परिवे ा में ि ाक्षक के लिए प्रि ाक्षण आव यक माना जाता है। ि ाक्षण प्रि ाक्षण कार्यक्रमों की सहायता से भावी ि ाक्षकों में ज्ञान, कौ ाल और व्यवहार का परिमार्जन किया जाता है जिससे ि ाक्षकों की क्षमता एवं कु ालता में वृद्धि होती है। किन्तु यदि उनमें अभिवृत्ति का विकास नहीं किया जाता है तो सभी ज्ञान और कौ ाल बेकार हो जायेंगे क्योंकि अभिवृत्ति कार्य करने के लिए ि ाक्षक को अभिप्रेरित करती है। अतः प्रि ाक्षण लेने वालों की अभिवृत्ति का अध्ययन कर उसका विकास करना आव यक प्रतीत होता है। इसी को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन का चयन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित बहुत अनुसंधान विभिन्न स्तर के ि ाक्षकों पर संपादित हुए हैं। अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित कुछ अध्ययन बी0एड0 के विद्यार्थियों पर हुए हैं जिन्हें नीचे प्रस्तुत किया गया है।

मेगर (1992) ने भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि पुरूश प्रि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति महिला प्रि ाक्षणार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि निजी संस्थानों के प्रि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सरकारी संस्थानों के प्रि ाक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है।

देवी (2005) ने बी0एड0 के विद्यार्थियों का अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन किया। अध्ययन हेतु न्याद ार्श के रूप में कलकत्ता के इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन एजुके ान के बी0एड0 पाठ्यक्रम के सत्र 2003–2004 के 76 छात्र अध्यापकों को लिया गया। छात्र अध्यापकों के

अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का मापन, एस0पी0 अहुवालिया द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी से किया गया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार हैं– (1) अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और बी0एड0 प्रवे ा परीक्षा में प्रद ान के बीच धनात्मक तथा सार्थक संबंध पाया गया और (2) पूर्व स्नातक तथा स्नातकोत्तर छात्र अध्यापकों के अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पायी गया।

गुनेली एवं असलान (2009) ने तुर्की के भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन किया और पाया कि महिला एवं पुरूश प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। महिला प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पुरूशों की तुलना में उच्च पायी गयी। प्र ि ाक्षणार्थियों के वर्ग एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

करीम एवं अन्य (2012) ने औपचारिक एवं दूर ि ाक्षा कार्यक्रम में प्रविश्ट ि ाक्षक प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि औपचारिक कार्यक्रम के प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति दूर ि ाक्षा वाले प्र ि ाक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है।

बोरसे (2012) ने बी0एड0 प्र ि ाक्षु ि ाक्षकों के अध्यापन अभिवृत्ति तथा आत्म–अवधारणा के बीच पारस्परिक संबंध' का अध्ययन किया। इस सर्वेक्षण के लिए नासिक कॉलेज के 80 बी0एड0 प्र ि ाक्षु का सैम्पल लिया गया। जिससे 40 महिला ि ाक्षक तथा 40 पुरूष ि ाक्षक भाामिल थे। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि महिला प्र ि ाक्षु ि ाक्षकों के अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति तथा आत्म अवधारणा में धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया। पुरूष प्र ि ाक्षु ि ाक्षकों के अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति तथा आत्म अवधारणा में भी धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया।

भार्मा एवं दहिया (2012) ने कला एवं विज्ञान के बी0एड0 प्र ि ाक्षुओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि पुरूश एवं महिला बी0एड0 प्र ि ाक्षुओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के प्र ि ाक्षुओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

भााह एवं थोकर (2013) ने सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों के ि ाक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि सरकारी वि वविद्यालयों के ि ाक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति निजी वि वविद्यालयों के ि ाक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च है।

परवेज एवं भाकीर (2013) ने भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इसके लिए 180 (90 सरकारी एव 90 निजी) प्र ि ाक्षण महाविद्यालयों के प्र ि ाक्षणार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि (1) सरकारी एवं निजी प्र ि ाक्षण महाविद्यालयों के प्र ि ाक्षणार्थियों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है जो निजी महाविद्यालयों के पक्ष में है, (2) महिला और पुरूश, मुस्लिम और गैर–मुस्लिम तथा विज्ञान एवं सामाजिक

विज्ञान वर्ग के ि ाक्षक प्र ि ाक्षणार्थियों की अध्यापन व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

महे वरी (2013) ने रूहेलखण्ड क्षेत्र के 400 भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमे 200 सरकारी एवं 200 निजी महाविद्यालयों के प्र ि ाक्षणार्थियों का चयन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि निजी महाविद्यालयों की महिलाएँ, विज्ञान वर्ग, मध्यम एवं उच्च आर्थिक वर्ग तथा संपूर्ण संख्या की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सरकारी महाविद्यालयों के प्र ि ाक्षणार्थियों की तुलना में उच्च है। किन्तु सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के पुरूश, कला, वाणिज्य, और निम्न आर्थिक स्तर के प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सेंथीकुमारन एवं मुथैया (2017) ने भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित हैं– पुरूश एवं महिला भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, (2) स्नातक एवं स्नातकोत्तर भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया, जो स्नातकोत्तर भावी ि ाक्षकों के पक्ष में रहा, (3) विवाहित एवं अविवाहित भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, और (4) 20000 तक एवं इससे अधिक माता–पिता के मासिक आय वाले भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया, जो उच्च आय वाले भावी ि ाक्षकों के पक्ष में रहा।

भाोध अध्ययन के उद्द य

1. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर देखना।
2. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर देखना।

भाोध हेतु परिकल्पनायें

1. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
2. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

भाोध हेतु जनसंख्या एवं न्याद ि

गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत बी0एड0 के सभी प्र ि ाक्षणार्थियों को इस अध्ययन हेतु जनसंख्या के

रूप में लिया गया है। यादृच्छिक न्याद ार्श तकनीकी का प्रयोग कर जनसंख्या से 200 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया।

भाोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत भाोध कार्य में तथ्य संकलन करने के लिए डॉ0 जे0 सी0 गोयल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत *अध्यापक अभिवृत्ति मापनी* का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचन

1. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र िक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर

गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर को दण्डारेख–1 में द ार्शाया गया है–

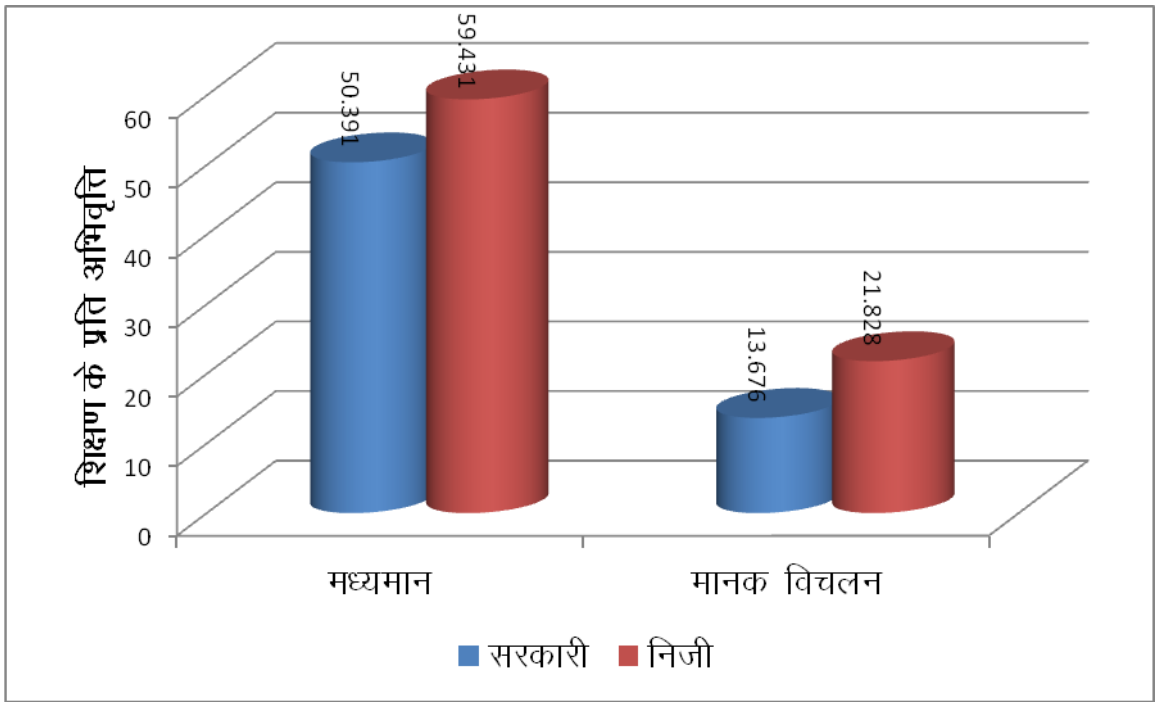

दण्डारेख–1: सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति पर मध्यमान एवं मानक विचलन।

दण्डारेख–1 से स्पश्ट है कि निजी वि वविद्यालयों के ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं का ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति पर मध्यमान (59.431) सरकारी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के मध्यमान (50.391) से ज्यादा है और मानक विचलन भी ज्यादा है। किन्तु दण्डारेख के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि सरकारी वि वविद्यालयों तथा निजी वि वविद्यालयों के ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के ि क्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर है। अतः सरकारी वि वविद्यालयों तथा निजी वि वविद्यालयों के ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के ि क्षण

के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर देखने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका परिणाम तालिका–1 में दिया गया है।

तालिका–1 गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयो में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर के लिए टी–परीक्षण का परिणाम

संस्थान के प्रकार	संख्या	प्राप्तांकों का योग	प्राप्तांकों के वर्गों का योग	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य
सरकारी	51	2569.95	138854	50.391	13.676	2.451
निजी	47	2793.25	187922.7	59.431	21.828	

p = 0.0160

तालिका–1 से स्पष्ट है कि गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयो में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर के लिए टी–मूल्य 2.451 है जिसकी सांभव्यता स्तर 0.0160 है। इसका अर्थ है कि गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयो में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। यह अंतर निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के पक्ष में है क्योंकि निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 59.431 सरकारी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान 50.391 से उच्च है।

अतः भून्य परिकल्पना कि "गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयो में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है" को अस्वीकार किया जाता है।

2. गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर

गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर को दण्डारेख–2 में द ार्ाया गया है–

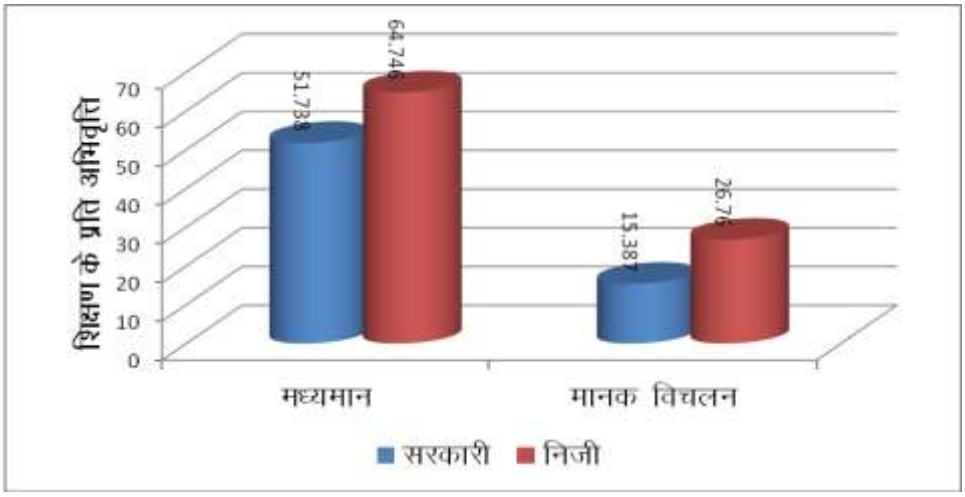

दण्डारेख–2: सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर मध्यमान एवं मानक विचलन

दण्डारेख–2 से स्पश्ट है कि निजी वि वविद्यालयों के भाहरी छात्राघ्यापिकाओं का ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर मध्यमान (64.746) सरकारी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राघ्यापिकाओं के मध्यमान (51.738) से ज्यादा है और मानक विचलन भी ज्यादा है। सरकारी वि वविद्यालयों तथा निजी वि वविद्यालयों के भाहरी छात्राध्यापिकाओं के ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर देखने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका परिणाम तालिका–2 में दिया गया है।

तालिका–2 गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर के लिए टी–परीक्षण का परिणाम

संस्थान के प्रकार	संख्या	प्राप्तांकों का योग	प्राप्तांकों के वर्गों का योग	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य
सरकारी	49	2535.16	142528.5	51.738	15.387	2.949
निजी	53	3431.55	259416.2	64.746	26.760	

p = 0.0039

तालिका–2 में, गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर के लिए टी–मूल्य 2.949 है जिसकी संभव्यता 0.0039 है। यह मान 0.01 सार्थकता स्तर से बहुत उच्च है। इसका मतलब है कि गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है और यह अंतर निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकओं के पक्ष में है क्योंकि इस समूह का मध्यमान 64.746 है जो सरकारी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकओं के मध्यमान 51.738 से उच्च है।

अतः भून्य परिकल्पना कि "गढ़वाल मण्डल में स्थित सरकारी वि वविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी छात्राध्यापिकओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है" को अस्वीकार किया जाता है।

परिणामों का विवेचन

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से स्पश्ट है कि ग्रामीण एवं भाहरी दोनों क्षेत्र के लिए निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्रि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाओं की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति सरकारी वि वविद्यालयों की छात्राध्यापिकाओं से बेहतर है। मेगर (1992) एवं सक्सेना (1995) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि निजी वि वविद्यालयों में अध्ययन करने वाले भावी ि ाक्षकों की ि ाक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले भावी ि ाक्षकों की तुलना में उच्च है। परवेज एवं भााकीर (2013) ने भी सरकारी एवं निजी प्रि ाक्षण महाविद्यालयों के प्रि ाक्षणार्थियों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जो कि निजी

वि वविद्यालयों के पक्ष में रहा। जबकि भााह एवं थोकर (2013) ने सरकारी महाविद्यालयों एवं निजी वि वविद्यालयों के ि ाक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया। सरकारी महाविद्यालयों के ि ाक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति निजी वि वविद्यालयों के ि ाक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पायी गयी। यह परिणाम प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के विपरित है।

निश्कर्श

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर इस भाोध कार्य से निश्कर्श निकलता है कि सरकारी एवं निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर है। यह अंतर निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्र ि ाक्षणार्थियों के पक्ष में पाया गया।

भौक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से स्पश्ट है कि निजी वि वविद्यालयों तथा उनसे सम्बद्ध अध्यापक प्र ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति सरकारी वि वविद्यालयों की छात्राध्यापिकओं से बेहतर है। अतः सरकारी वि वविद्यालयों में कार्यरत् प्राध्यापकों एवं प्राचार्य को चाहिए कि वि वविद्यालय में इस प्रकार का वातावरण बने कि प्र ि ाक्षणार्थियों की ि ाक्षण के प्रति अभिवृत्ति में विकास हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Ahluwalia, S.P. (2007). Manual for Teacher Attitude Inventory (TAI), Agra, National Psychological Corporation, 1-15.

Borase, Chandrakant (2014). Teaching attitude of the B.Ed. teacher trainees and secondary school teachers. Scholorly Research Journal for Humanity Science & English Language, I(II), 197-200.

Devi, N. S. (2005). Assessment of attitude towards teaching. Edutrack, 4(12), 29-30.

Goyal, J. C. (1981). A study of the relationship among attitude, job-satisfaction, adjustment and professional interest of teacher education in India. Indian Educational Review, 16(4), 5-15.

Guneyli, A., & Aslan, C. (2009). Evaluation of Turkish prospective teachers' attitudes towards teaching profession (Near East University case), Procedia Social and Behavioral Sciences, 1, 313-319.

Halawah, Ibtesam. (2008). Factors influencing perspective teachers' attitudes toward teaching. University of Sharjah Journal for Humanities & Social Sciences, 5(1), 1-17.

Kareem, U., Jamil, A., Atta, M. A., Khan, M.Y., & Jan, T. (2012). Comparative study of the professional attitudes of prospective teachers recruited in regular and distance education programmes. International Journal of Learning & Development, 2 (5), 182-189.

Mager, M.S. (1992). Attitude towards teaching profession and values of student teachers. Ph.D. in Education. Dr. Harisingh Gour Uni., Sagar, M.P.

Maheshwari, Amita (2013). A study of attitude towards teaching profession of prospective teachers. International Research Journal of Commerce Arts and Science, 4(3), 601-609.

Parvez, Mohammad and Shakir, Mohd (2013). Attitudes of prospective teachers towards teaching profession. Journal of Education and Practice, 4(10), 172-178.

Saxena, J. (1995). A study of teacher effectiveness in relation to adjustment, job-satisfaction and attitude towards teaching profession. Ph.D. in Education, Garhwal Uni.

Senthilkumaran, M. and Muthaiah, N. (2017). Prospective teachers attitude towards teaching profession. Indian Journal of Applied Research, 7(4), 588-589.

Shah, S.I.A., & Thoker, A.A. (2013). A comparative study of government and private secondary school teachers towards their teaching profession. Journal of Education and Practice, 4 (1), 118-121.

Sharma, S., & Dhaiya, P. (2012). Comparative study of attitude towards teaching of science and arts of B.Ed. students, Bhartiyam International Journal of Education & Research, 1 (2), 2277-1255.